संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२३ ● अंक ०६ ● २७ फरवरी २०१८ माघ शुक्ल पक्ष द्वादशी संवत् २०७४ ● दयानन्दाब्द १६३ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११८

होली पर्व पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की ओर से सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों /सभासदों /सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं।

– डॉ0 धीरज सिंह आर्य, सभा प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ से सम्बद्ध उत्तर प्रदेश में कार्यरत् आर्य समाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं के पदाधिकारियों से निवेदन है, कि होली पर्व पर सभी आर्य समाजें एवं शिक्षण संस्थाएं प्रदेश की खुशहाली एवं जनमानस की बुराईयों को दूर करने के लिए यज्ञ करें। होली वह त्योहार है जो प्रत्येक आबालवृद्ध नर–नारी में 15–20 दिन के लिए प्रसन्नता से भर देती है। भूखे, रोगी, चिन्तामस्त सभी भारतीय एक बार तो चिन्ता को भूल कर हो–हो होली है के उल्लास पूर्ण घोष में अपने को भूल से जाते हैं। नंग धड़ंग लगोटाधार अकिन्चन तक इस त्यौहार पर चले होली खेले कन्हैया के संग यह मधुर पद गाते हुये देखे गये हैं। पठान आये, मुगल आये, अंग्रेज आये और अब धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र में हम सभी मिलकर सहस्र वर्ष पुराने पुर्वजों को न भूल पायी। उनके विचार में आज भी होली खोजने को विद्यमान हैं।

होली का त्योहार कोई मजहबी त्यौहार नहीं, किन्तु ऋतु सम्बन्धी त्योहार है। ऋतु परिवर्तन के समय मानसिक परिवर्तन भी होता रहे और इस प्रकार होता रहे कि ऋतु और मानसिक विचारों में सामंजस्य (एकता) हो, तो स्वास्थ्य के लिये यह बात बहुत उपयुक्त ठहरती है। बसंत ऋतु शरीर में एक अद्भुत प्रसन्नता भर देती है। मनुष्य ही नहीं, पेड़–पौधे, पशु–पक्षी सभी प्रसन्न मुद्रा में आ जाते हैं। लताओं में जवानी आ जाती है। पेड़–पुष्पों से लदे मस्ती में झूमने लगते हैं। भारतमाता धानी साड़ी जिसमें सरसों के सुनहरे फूल जड़े हुए हैं। कोयल का गान, मधुपों का वीणा वादन फूलों का हसना लताओं का नृत्य, तरूओं को अपने दलों से ताल देना प्रकृति की मस्ती है।

इस त्योहार पर रंग, गुलाल, गाना–बजाना, हर्षोद्रेक के प्रतीक हैं। पर काला मुँह करना, गालियां बकना आदि इसके अति हैं। "अति सर्वत्र वर्जयेत्" इस नीति वाक्य के अनुसार अति को त्याग देना चाहिए और सभी देशवासियों को मिलकर इन दिनों में निश्चिन्त होकर प्रसन्नता से भरकर मेल प्रेम और प्रभु भक्ति के गानों से देश को गुँजा देना चाहिये। ऐसा करने से वर्ष भर की ग्लानि–थकान दूर होगी और स्वास्थ्य पर सुन्दर आरोग्यवर्द्धक प्रभाव पड़ेगा।

इसी के साथ होली पर्व पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ के सभी पदाधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों एवं साधारण सभा के सदस्यों एवं प्रदेश की विभिन्न आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं सदस्यों को होली पर्व पर संस्था की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं। आइए हम सभी मिलकर चलें और एक दूसरे के होले। होली आप सभी को शुभ हो।

हम अपनी संस्कृति वेद ज्ञान को पहचाने

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मंत्री

भारत को भारत वर्ष कहने से पूर्व आर्यावर्त कहते थे यही से हम शुरू कहते हैं। भारत के प्राचीन इतिहास में हम जहां से दार्शनिक, साहित्यक, सामाजिक, बौद्धिक एवं अन्य प्रकार की दिशाओं में उत्थान पाते हैं, वह है वैदिक काल! वैदिक काल से पूर्व का कोई भी इतिहास प्रमाणिक रूप से नहीं मिलता। वैसे अटकल पच्चू से या खंडहरों में प्राप्त होने वाली नष्ट भ्रष्ट वस्तुओं द्वारा अनुमान लगाकर कुछ भी लिखा जा सकता है पर विकसित स्वरूप तो वैदिक काल का ही माना जाएगा जो कि प्राच्य और पाश्चातय विद्वानों की सम्मत्यानुसार प्रामाणिक एवं वास्तविक है।

आर्यावर्त के निवासी आर्य थे जिनकी सभ्यता 'आर्य सभ्यता' या 'वैदिक सभ्यता' कहलाती है। इन आर्यों के मूल ग्रंथ वेद थे जो चार भागों में विभक्त हैं– (१) ऋग्वेद (२) यजुर्वेद (३) सामवेद (४) अथर्ववेद। इन्हें विषय के अनुसार तीन भागों में बांटा गया है ज्ञान, कर्म और उपासना। इस वेदत्रयी भी कहते हैं। यह ग्रन्थ न केवल भारतवर्ष के ही, अपितु सम्पूर्ण विश्व के सर्व प्राचीन और उत्तम शास्त्रीय पुस्तक है। आज कल अधिकतर लोग पाश्चात्य विद्वानों की सम्पत्ति को अधिक सत्य मानते हैं।

भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता है कि इसके मूल ग्रन्थ वेद संसार के समस्त साहित्य में सबसे प्राचीन पुस्तक है। देखिए एक चीनी विद्वान प्रोफेसर श्री तानयुन शान लिखते हैं–

"२३७५ ई०पू० से २२०६ ई०पू० के बीच लिखी हुई 'पुचिपंड' (पुस्तकों के नियम) जिसमें सम्राट थाडइओ और ष्य–पुन का वृत्तान्त है शायद वेदों को छोड़कर दुनियां में इनमें पुरानी कोई पुस्तक नहीं हैं।"

(देखिए ज्ञानोदय (कलकत्ता) का एशिया

शेष पृष्ठ ८ पर

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

उम्मीद की नई किरण लायेगा इन्वेस्टर्स समिट

ढाई दशक के अंतराल में हुए प्रदेश के लगभग सभी मुख्यमंत्री पूरे कार्यकाल के दौरान एक या दो बार मुंबई और कोलकाता के चक्कर काट आते थे। किसी पांच सितारा होटल में कुछ उद्योगपतियों के साथ लंच या डिनर हो जाता था, लेकिन न तो उत्तर प्रदेश में कभी ऐसा माहौल बन सका कि उद्योगपतियों ने उत्तर प्रदेश में कभी ऐसा माहौल बन सका कि उद्योगपति इस ओर आने का मन बनाएं और न ही उद्योगपतियों ने उत्तर प्रदेश आने का मंसूबा जाहिर किया। वर्षों बाद उत्तर प्रदेश में उद्योग लाने का प्रयास होता दिख रहा है, वह भी पूरी गंभीरता के साथ। लखनऊ में आयोजित इन्वेस्टर्स समित से पहले दिल्ली, बेंगलुरू, हैदराबाद, मुंबई, कोलकाता, अहमदाबाद और कानपुर में राज्य सरकार रोड शो कर चुकी है। इन रोड शो के दौरान प्रदेश सरकार के उद्योगमंत्री सतीश महानौ के साथ अधिकारियों ने देश के प्रमुख उद्योगपतियों से मिलकर न सिर्फ उन्हें प्रदेश में उद्योग लगाने के लिए आमंत्रित किया, बल्कि यह भरोसा भी दिलाया कि उन्हें सरकार की ओर से पूरा सहयोग मिलेगा। वास्तव में कोई भी उद्योगपति किसी ऐसे प्रदेश में निवेश नहीं करना चाहता, जहां से प्रशासनिक अड़चनों के साथ–साथ खराब कानून– व्यस्था की चुनौतियों से जूझना पड़े। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मुंबई के रोड शो में देश के दिग्गज उद्योगपतियों को भरोसा दिला चुके हैं कि प्रदेश में उनका स्वागत सुदृढ़ कानून–व्यवस्था के साथ किया जाएगा। समिट का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी करेंगे। समापन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद करेंगे। समिट में केन्द्र सरकार के १८ मंत्री हिस्सा लेंगे।

समिट में प्रदेश में तीन लाख करोड़ रूपये का निवेश होने का अनुमान है। इसमें ३० सत्र होंगे। निवेशकों और उद्यमियों के इस समागम में सात देश पार्टनर कंट्री के तौर पर शामिल हो रहे हैं। इसमें फिनलैंड, नीदरलैंड्स, जापन, चेक गणराज्य, थाईलैंड, स्लोवाकिया और मॉरीशस शामिल हैं। वस्तुतः उद्योग क्षेत्र की एक बड़ी चुनौती कच्चे माल की उपलब्धता एवं तैयार माल को बाजार तक पहुंचाने की होती है। इस प्रक्रिया पर आने वाली लागत अन्य प्रदेशों से अधिक नहीं होनी चाहिए। गुजरात–महाराष्ट्र सहित दक्षिण के ज्यादातर राज्य समुद्र के किनारे स्थित हैं। इन प्रदेशों में अच्छे बन्दरगाह उपलब्ध हैं। जहां किसी उद्योग में लगने वाला कच्चा माल आसानी से आयात किया जा सकता है। इन राज्यों में तैयार उत्पादों को इन्हीं बंदरगाहों के जरिये देश के अलावा विदेशी बाजारों तक भी पहुंचाया जा सकता ह। दूसरी ओर उत्तर प्रदेश से जलमार्ग का यातायात संभवन नहीं है। इसी कारण उत्तर प्रदेश, बिहार, जैसे लैंड लॉक राज्य हर प्रकार के उद्योग में पिश्चम–दक्षिण राज्यों से होड़ नहीं कर सकते, लेकिन उत्तर प्रदेश, बिहार के पास उपजाऊ भूमि एवं अच्दे भूमिगत जलस्तर जैसी ऐसी अमूल्य प्राकृतिक निधि हैं कि इसका सही उपयोग कर इन पर आधारित उद्योग यहां अपना विशिष्ट स्थान बना सकते हैं। संभवतः इस तथ्य को भी पहली बार प्रदेश सरकार ने समझा है। कृषि आधारित उद्योगों के अलावा 'एक जनपद एक उत्पाद जैसी पहल पर बात शुरू हुई है। उत्तर प्रदेश के कई कृषि एवं बागवानी उत्पाद विश्व प्रसिद्ध रहे हैं, लेकिन उन्हें दुनियां के बाजार तक पहुंचाने की गंभीर कोशिश कभी नहीं की गई। प्रदेश सरकार की नई औद्योगिक नीति में यह प्रयास होता दिखता है। वस्तुतः इसे गंभीरता से जमीनी स्तर तक पहुंचाने की जरूरत है।

जिस प्रकार से समिट के पहले उसके पक्ष में

शेष पृष्ठ ६ पर

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ पञ्चम समुल्लासारम्भः

अथ वानप्रस्थसंन्यासविधिं वक्ष्यामः

ब्रह्मचर्याश्रमं समाप्य गृही भवत्े गृही भूत्वा वनी भवेद्वनी भूत्वा प्रव्रजेत्।।–शत० कां० १४।।

मनुष्यों को उचित है कि ब्रह्मचर्य्याश्रम को समाप्त करके गृहस्थ होकर वानप्रस्थ और वानप्रस्थ होके सन्यासी होवें अर्थात् अनुक्रम से आश्रम का विधान है।

एवं गृहाश्रमे स्थित्वा विधिवत्स्नातको द्विजः। वने वसेत्तु नियतो यथावद्विजितेन्द्रियः।।१।।

गृहस्थस्तु यदा पश्येद्वलीपलितमात्मनः। अपत्यस्यैव चापत्यं तदारण्य समाश्रयेत्।।२।।

सन्त्यज्य ग्राम्यमाहारं सर्वं चैव परिच्छदम्। पुत्रेषु भार्यां निःक्षिप्य वनं गच्छेत्सहैव वा।।३।।

अग्निहोत्रं समादाय गृह्यं चाग्निपरिच्छदम्। ग्रामादरण्यं निःसृत्य निवसेन्नियतेन्द्रियः।।४।।

मुन्यन्नैर्विविधैर्मेध्यैः शाकमूलफलेन वा। एतानेव महायज्ञान् निर्वपेद्विधिपूर्वकम्।।५।।

इस प्रकार स्नातक अर्थात् ब्रह्मचर्य्यपूर्वक गृहाश्रम का कर्त्ता द्विज अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य गृहाश्रम में ठहर कर निश्चितात्मा और यथावत् इन्द्रियों को जीत के वन में वसें।।१।।

परन्तु जब गृहस्थ शिर के श्वेत केश और त्वचा ढीली हो जाय और लड़के का लड़का भी हो गया हो तब वन में जाके बसे।।२।।

सब ग्राम के आहार और वस्त्रादि सब उत्तमोत्तम पदार्थों को छोड़ पुत्रों के पास स्त्री को रख वा अपने साथ ले के ग्राम से निक दृढेन्द्रिय होकर अरण्य में जाके बसे।।४।।

नाना प्रकार के सामा आदि अन्न, सुन्दर–सुन्दर शाक, मूल, फल, फूल, कन्दादि से पूर्वोक्त पञ्चमहायज्ञों को करे और उसी से अतिथि सेवा और आप भी निर्वाह करें।।५।।

स्वाध्याये नित्ययुक्तः स्याद्दान्तो मैत्रः समाहितः। दाता नित्यमनादाता सर्वभूतानुकम्पकः।।१।।

अप्रयत्नः सुखार्थेषु ब्रह्मचारी धराशयः। शरणेष्वममश्चैव वृक्षमूलनिकेतनः।।२।।

स्वाध्याय अर्थात् पढ़ने में नित्युक्त, जितात्मा, सब का मित्र, इन्दियों का नित्य दमनशील, विद्यादि का दान देने हारा और सब पर दयालु, किसी से कुछ भी पदार्थ न लेवे इस प्रकार सदा वर्तमान करे।।१।

शरीर के सुख के लिए अति प्रयत्न न करे किन्तु ब्रह्मचारी रहे अर्थात् अपनी स्त्री साथ हो तथापि उस से विषयचेष्टा कुछ न करे भूमि में सोवे। अपने आश्रित वा स्वकीय पदार्थों में ममता न करे। वृक्ष के मूल में वसे।।२।।

तपः श्रद्धे ये ह्युपवसन्त्यरण्ये शान्ता विद्वांसो भैक्षचर्य्यां चरन्तः।

सूर्य्यद्वारेण ते विरजाः प्रयान्ति यत्राऽमृतः स पुरुषो ह्यव्ययात्मा।।१।।

–मुण्ड० खं० २। मं० ११।

जो शान्त विद्वान् लोग वन में तप धर्म्मानुष्ठान और सत्य की श्रद्धा करके भिक्षाचरण करते हुए जंगल में बसते हैं, वे जहाँ नाशरहित पूर्ण पुरूष हानि लाभरहित परमात्मा है, वहां निर्मल होकर प्राणद्वार से उस परमात्मा को प्राप्त होके आनन्दित हो जाते हैं।।१।।

वानप्रस्थ को उचित है कि– मैं अग्नि में होम कर दीक्षित होकर व्रत, सत्याचरण और श्रद्धा को प्राप्त होऊं–ऐसी इच्छा करके वानप्रस्थ हो नाना प्रकार की तपश्चर्या, सत्संग, योगाभ्यास, सुविचार से ज्ञान और पवित्रता प्राप्त करे। पश्चात् जब संन्यासग्रहण की इच्छा हो तब स्त्री को पुत्रों के पास भेज देवे फिर संन्यास ग्रहण करें।

इति संक्षेपेण वानप्रस्थविधिः।

अथ सन्यासविधिः

वनेषु च विहृत्यैवं तृतीयं भागमायुषः। चतुर्थमायुषो भागं त्यक्त्वा सङ्गन् परिव्रजेत्।। मनु०।।

इस प्रकार वनों में आयु का तीसरा भाग अर्थात् पचासवें वर्ष से पचहत्तरवें वर्ष पर्यन्त वानप्रस्थ होके आयु के चौथे भाग में संगों को छोड़ के परिव्राट् अर्थात् संन्यासी हो जावे।

(प्रश्न) गृहाश्रम और वानप्रस्थाश्रम न करके–संन्यासाश्रम करे उस को पाप होता होता है वा नहीं?

(उत्तर) होता है और नहीं भी होता।

(प्रश्न) यह दो प्रकार की बात क्यों कहते हो?

(उत्तर) दो प्रकार की नहीं, क्योंकि जो बाल्यावस्था में विरक्त हो कर विषयों में फंसे वह महापापी और जो न फंसे वह महापुण्यात्मा सत्पुरूष है।

यदहरेव विरजेत्तदहरेव प्रव्रजेद्वनाद्वा गृहाद्वा ब्रह्मचयदिव प्रव्रजेत्।।

–ये ब्राह्मण ग्रन्थ के वचन है।

जिस दिन वैराग्य प्राप्त हो उसी दिन घर वा वन से संन्यास ग्रहण कर लेवे। पहले संन्यास का पक्षक्रम कहा। और इस में विकल्प अर्थात् वानप्रस्थ न करे, गृहस्थाश्रम ही से संन्यास ग्रहण करे और इस में विकल्प अर्थात् वानप्रस्थ न करे, गृहस्थाश्रम ही से संन्यास ग्रहण करे और तृतीय पक्ष है कि जो पूर्ण विद्वान् जितेन्द्रिय विषय भोग की कामना से रहित परोपकार करने की इच्छा से युक्त पुरूष हो, वह ब्रह्मचर्याश्रम ही में संन्यास लेवे। और वेदों में भी "यतयः ब्राह्मणस्य विजानतः" इत्यादि पदों से सन्यास का विधान है। परन्तु–

नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो नासमाहितः।

नाशान्तमानसो वापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात्।। –कठ० वल्ली २। मं० २४।।

जो दुराचार से पृथक् नहीं, जिसको शान्ति नहीं, जिस का आत्मा योगी नहीं और जिस का मन शान्त नहीं है, वह संन्यास ले के भी प्रज्ञान से परमात्मा को प्राप्त नहीं होता। इसलिए–

क्रमशः

धर्म पथ पर भटकाव और बाधाएँ

सत्य प्रकाश आर्य, सुल्तानपुर

मानव में सेवा का महत्व और जीवन के विकास के लिए उसकी आवश्यकता समझ लेने के बाद सेवा धर्म की उमंग उठती है। उस उमंग के अनुरूप वे सेवा के मार्ग प्रवृत्ति भी होते है किन्तु इस धर्म पथ पर ज्यादा दिन तक नहीं चल पाते हैं। सच तो यह है सेवा के प्रति आवश्यक उत्साह और निष्ठा का जागरण नहीं हो पाया। कुछ की आदत है कठिनाई को समझ, देख, तोल, भाव कर उसे झमेला समझकर छोड़ बैठते है अथवा असफलता से डर कर चुप बैठ जाते हैं बहुत से कारण है जिनमें सेवा कार्य में प्रगट नहीं हो पा रही है। लोग या तो गलत बातों को सही समझकर विचलित हो जाते है अथवा थोड़े सफलता के अहंकार में दिग्रभ्रमित कर देता है। इन सब बाधाओं और भटकाव की परिस्थियों को पहले सोच समझकर चला जावे तो आर्य धर्म सेवा धर्म का निर्वाह पालन किया जा सकता है होता यह भी है कि सेवा धर्म अपना लेने के बाद उसे अपना जीवन लक्ष्य बनाने और साधना स्तर पर करने की भूल हो ही जाती है। यह भूलने चाहे परिस्थिति वश हो या स्वाभाव वश हर पंथी को उसके उस साधना से दूर हटाती है हमें इस सत्य को स्मरण रखना ही होगा कि यदि मार्ग दर्शक बनना हो तो नेतृत्व कौशल नहीं, चरित्र व्रती होना चाहिए।

काल के चक्र में ईसाई मत, इस्लाम मत, का जो प्रचार प्रसार हो रहा है उस बीच हिन्दु जगत धीरे–धीरे हिन्दु के मत मतान्तर के बीच पुरोहित नहीं विद्यार्थी तो है पर शिष्य और ऋषि भक्त नहीं, राष्ट्र और हिन्दु धर्म के लिए जो कुर्बानिया शिख समाज ने दी हैं उसे कोई भुला नहीं सकता। और हम पदों पर बैठने के लिए झूठ फरेब सब का सहारा ले रहे हैं। सेवा व्रती को भूमिका निभाने के लिए अग्रसर होते समय दृढ़ प्रतिज्ञ और अपने स्तर व्यक्तित्व के दृष्टि समान लोगों की तुलना में कहीं ऊँचे उठ कर रहना होगा जिसके लिए जो गलत है उसे दूर करने का प्रबल अभ्यास करना होगा।

सर्वविदित है कि लोभ मोह के बन्धन आदर्श वादिता आध्यात्मिकता के मार्ग पर चलने वालों के लिए बाधा ही है। लालची, विलासी, संग्रही आदमी को लाभ लिप्सा इस कदर जकड़े रहती है कि उसे परमार्थ में कोई रस ही नहीं आता अपनी भावात्मक तोल में स्वार्थ वजन दार प्रतीत होता है और परमार्थ हल्का इस कारण लालच में रत्ती भर कमी पड़ते ही परमार्थ से अपना हाथ खींच लेता है। कुछ कम खर्च में वह आडम्बर करता है सिर्फ उतना जिसमें जन सेवी, और पुण्यात्मा की अधिक ख्याति खरीदी जा सके। और फिर (व्या–मोह) अपने शरीर और परिवार के साथ अत्यधिक ममता जोड़ने वाले उन्हें खुश करने हेतु उचित अनुचित कुछ भी करते रहते रहते है वे नित्य कोल्हू के बैल की तरह आँख में ढक्कन लगाये चलते रहते हैं। अपने को अपने ही खोल में छुपाये हुए दूसरे का सब कुछ अपने स्वार्थ के लिए ले लेना चाहते हैं। मोह के चक्रजाल में वह व्यक्ति सब कुछ अपने परिवार में बाँटता जाता है और फिर बुजुर्ग दम्पत्ति अकेले रह जाते है अपना दुर्भाग्य बाँटते पसारते। धर्म पथ पर यह बातें छोटी है पर सबसे बड़ा अवरोध है। बड़प्पन बांटते पसारते। धर्म पथ पर यह बातें छोटी है पर सबसे बड़ा अवरोध है है अहन्ता। बड़प्पन प्राप्त करने की आकांक्षा को कहते हैं। अन्दर मन में स्थिर बैठी हुई जोक की तरह? दूसरों की तुलना में अपने को अधिक महत्व, गौरव, श्रेय, पद, सम्मान मिलना ही चाहिए। यही है मन रूपी अहन्ता की आकांक्षा। जिसमें भेष, वेश, वस्त्र, आभूषण, सौन्दर्य, फैशन जिसमें कितना समय और धन नष्ट होता रहा है बड़प्पन पाने की मृगतृष्णा में लोग कितने पाखण्ड रचते है और भूल जाते है धर्म पथ को जिन्हें एक जून भोजन की आवश्यकता है।

आर्य जगत ने बड़े–बड़े आध्यात्म वादी, आदर्शवादी, त्यागी, योगी, लोक सेवी के रूप में प्रख्यात है। यदि चिन्तन किया जावे तो इनके अन्दर अहन्ता (अनन्त इच्छा) चोर दरवाजे से घुसा और तानाशाह की तरह सिंहासनारूढ़ बना बैठा दिखाई पड़ता है। सन्तों के अखाड़े, धर्म, सम्प्रदाय, संस्था, संगठन, बड़ों की प्रतिस्पर्धा, के कलह के केन्द्र बने रहते हैं। एक ही संस्था के सदस्य एक ही लक्ष्य को दुहाई देने वाले आखिर इस कदर लड़ते क्यों है एक दूसरे को नीचा दिखाने में संलग्न क्यों है। समान लोगों की समझ से परे है उन्हें तो कुछ भी कह कर समझा बहका दिया जाता है। पर इतनी तो समझ है आर्य मन्दिर जो ज्ञान ज्योति है किस हालत में है वास्तविकता तो यही है येन प्रकारेण वे अपना बड़प्पन सिद्ध करना चाहते है। जब कोई दूसरा आगे आता भी है तो मोहल्ले में कुत्तों की तरह एक पर सभी टूट पड़ते है संस्था की स्थिति में यदि गहराई से डुबकी लगाई जाय तो बस यही हमारी अहन्ता कि सोच है जो कालनेमी सुपर्णखा की तरह बुद्धि में विराज मान हो जाती है। यहां एक प्रकरण ध्यान देने योग्य है वो है व्यक्तियों से बचे जो काल नेम की तरह सतत् अपना षड्यंत्र रचते रहते है वे लोग सेवी की प्रगति के मार्ग के बाधक बनते हैं। जिस प्रकार कोई लालची मनुष्य चंदा या भीक्षा व्यावसाय करके पेट भरने पर भी लगातार मांगता कमाता जोड़ता रहता है और मृत्यु उपरान्त चिथड़ों कुल्हड़ों में लाखों की दौलत छोड़ जाते हैं उसी प्रकार लोक सेवी आध्यात्मवादी का कलेवर बना लेने पर पर भी यदि उसे देखा जाएगा। इस प्रकार अनेकों तरह के व्यक्ति हैं कोई सत्य परामर्श देकर कोई मनोबल को ऊँचा उठाते है और साधना क्षेत्र में भी सहयोगी बनते हैं। किन्तु बहुल ऐसे व्यक्ति का है मायावी विधि से कालनेमी की भूमिका निभाते अच्छे भले आदमी को पथ भ्रष्ट कर देते हैं। हर समाज सेवी धर्म पन्थी को अहन्ता से दूर रहना ही होगा।

दुबुद्धि देने का कार्य हर युग में होता है। यति, तपस्वी, योगी, महात्मा कोई भेष धारण कर उसकी विक्षुब्ध जीवात्मा सतत् भटकती एवं कमजोर मन वाले व्यक्तियों को ढूंढ़ती रहती है। "स्वामी दयानन्द" के धर्म पथ पर चलने वालों को लोभ, मोह, अहन्ता, अहंकार, सभी विविध एषणाओं को त्याग करना ही होगा।

हमारा लक्ष्य और चिन्तनः– जीवन को परमपिता परमात्मा का सर्वोपरि उपहार समझकर आत्म कल्याण जन कल्याण और विश्व कल्याण के लिए समाहित करें। ज्ञान योगी कर्म योगी की तरह प्रातः उठते ही एक दिन का जन्म और सोते ही एक दिन का मरण सोच श्रेष्ठतम सदउपयोग का भाव निर्धारण करें। चिन्तन करें। समय ही जीवन है। आलस्य प्रमाद को अपना शत्रु समझे एक पल निकट न आने दे किसी भी व्यक्ति या काल को छोटा न माने। योजना बद्ध रूप से कार्य करें। दूसरों से विनय वचन, सम्मानित भाव और शिष्टता से मिले बोले कम सुने अधिक "मैं" के स्थान पर हम लोग शब्द का प्रयोग करें और करायें। भूल से भी गलत कार्यों का समर्थन न करें। कुसंस्कारों को खोजे और उन्हें संकल्प पूर्वक बाहर निकाले इसमें कठोरता बरतने मन मारने और प्रतिकूलता सहने को ही तप कहते है। तप और संयम से ही मनुष्य सच्चे रूप में शक्तिशाली बनता है। इसे भी सोचे ३३ करोड़ देवताओं में भटकता हिन्दु यदि धीरे–धीरे खत्म हो गया तो यह तमाम मत मतान्तर किस काम में आवेंगे।

प्रेरक प्रसंग–

बड़ा कोई नहीं

संकलनकर्ता– शैलेन्द्र सिंह

मनुष्य सब एक समान हैं। परमात्मा ने शरीर की दृष्टि से सबकी रचना सी की है। सबको बुद्धि दी। जो यम नियम से रहते हैं वे अपने शरीर को स्वस्थ सुडौल बना लेते हैं। इसके विपरीत शरीर को कमजोर बनाते हैं। जो विवेक से काम लेते हैं बुद्धि को प्रखर बना लेते हैं। सामान्यया इस दृष्टि से सब समान हैं। कोई बड़ा छोटा नहीं होता। बड़ा होने का भ्रम पालकर मनुष्य कुछ नहीं पाता।

जेनी नाम का एक वृद्ध व्यक्ति छैनी हथोड़ा से पत्थर तोड़कर सड़कों के निर्माण में काम आने वाली बजरी बना रहा था। वह रोज सुबह आता। दोपहरी में भी लगा रहता। शाम को अपने घर जाता। यही उसकी आजीविका का साधन था। एक दिन तपती दोपहरी में जब वह अपना काम कर रहा था। वहां से रथ में सवार राजा निकला। जेनी ने सोचा काश मैं राजा होता। मेरे अन्दर कितनी शक्ति होती उससे प्रजा के काम करता। परमेश्वर ने उसे राजा बना दिया। अब वह रथ के सहारे और बिना रथ भी घूम–घूम कर जनता की सेवा करने लगा। उसने अनेकों को माला माल कर दिया। एक दिन उसने सोचा सूरज होता तो लोगों को प्रकाश देता। परमेश्वर ने उसे सूरज बना दिया। एक दिन सूरज के प्रकाश में कहीं जा रहा था कि बादल आ गये। उन्होंने सूरज को ढक लिया प्रकाश तक नहीं रहा। उसने सोचा बादल सूरज से बड़ा है। यदि वह बादल होता तो चाहे जब सूरज से बचने को छाया कर देता और आवश्यकतानुसार पानी बरसा देता। यह सब सब सोचते एक दिन उसके

शेष पृष्ठ ५ पर

आर्य समाज विषयक भ्रामक प्रचार का उत्तर

– आचार्य सोमदेव, मेरठ

आर्य समाज के विषयक में अनेक लोगों को भ्रान्तियां बनी रही हैं। कुछ लोग कहते हैं, आर्य समाज नास्तिकों का समूह है, कुछ कहते हैं कि आर्यसमाज वाले राम, कृष्ण, शिव आदि को नहीं मानते। वास्तविकता से देखा जाये तो पता लगेगा कि ठीक–ठीक आस्तिक तो आर्यसमाज को मानने वाला ही है। क्योंकि नास्तिक उसे कहते हैं जो ईश्वर, वेद, धर्म पुनर्जन्म आदि को नहीं मानता। इसके विपरीत आर्यसमाज तो ईश्वर के सच्चे स्वरूप निराकार, न्यायकारी, सर्वव्यापक आदि को मानता है। वेद, धर्म, पुनर्जन्म सभी को मानता है। इन सबको मानने वाला नास्तिक कैसे? रही बात राम, कृष्ण, शिव की तो इनको भी आर्यसमाज बड़े सम्मान से महापुरूषों की दृष्टि से देखता है। हाँ। इनको परमात्मा के रूप में नहीं मानता, नहीं देखता।

'खेजड़ा एक्सप्रेस' पाक्षिक बीकानेर से प्रकाशित पत्रिका भी आर्यसमाज के विषय में कई भ्रान्तियां फैला रही है। इस पत्रिका के दिनांक २४.६.२०१२ के अंक में लिखा है– 'आर्यसमाज इस्लामिक धर्म के मूर्ति–पूजा सूत्र के विरोध से प्रभावित है, इसलिए आर्यसमाजी कभी भी कहीं भी तीर्थ या मन्दिर की आलोचन करने में हिचकिचाते नहीं हैं। यह इनको पत्रिका में पहली भ्रान्ति है। लेखक महोदय ने आर्यसमाज के मूर्तिपूजा खण्डन विषय को इस्लाम से प्रभावित कहा है। जैसे– इस्लाम मूर्तिपूजा (बुत परस्ती) को नहीं मानता, वैसे ही आर्यसमाज भी नहीं मानता। लगता है, लेखक को यह नहीं पता कि इस्लाम भी एक बहुत बड़ा मूर्तिपूजक सम्प्रदाय है। मक्का में हज को जाने वाले मुस्लिम वहां पड़े काले पत्थर को चूमते हैं, क्या ये उनकी मूर्तिपूजा नहीं? कब्रों, मजारों, दरगाहों पर जाकर पत्थर के ऊपर चादर चढ़ाना मूर्तिपूजा नहीं कब्रों, मजारों पर जाकर वहां धागा बाँधना, उससे मनोकामना पूरी होने के लिए मन्नते मांगना मूर्तिपूजा नहीं? कब्रों मजारों पर जाकर वाहं धागा बांधना, उससे मनोकामना पूरी होने के मन्नतें मांगना मूर्तिपूजा नहीं? हाँ ये सब इस्लामिक मूर्तिपूजा है। लगता है खेजड़ा एक्सप्रेस के लेखक इस भ्रम में हैं कि इस्लाम मूर्तिपूजक नहीं है, इसलिए आर्यसमाज को उनसे प्रभावित लिख रहे हैं।

सत्य तो यह है कि आर्यसमाज किसी इस्लाम से प्रभावित नहीं है। वह तो सत्य सनातन वैदिक धर्म से प्रभावित है, वेद और ऋषियों का अनुयायी है, इसलिए झूठी मूर्तिपूजा और मिथ्या तीर्थ–मन्दिरों की आलोचना करता है। क्योंकि वेदादि सत्य शास्त्रों में मूर्ति को भगवान् मानकर पूजने का विधान नहीं हैं। माता–पिता, आचार्य, विद्वानों के सत्संग को तीर्थ मानता है, न कि मिथ्या तीर्थ गंगा–स्नान आदि को।

दूसरी भ्रान्ति– खेजड़ा एक्सप्रेस में लिखा है 'स्वामी दयानन्द ने राम के वंशज गुरूनानक देव को भी आलोचना की थी।' इस भ्रान्ति को दूर करने के लिए हम कहते हैं कि स्वामी दयानन्द ने जो कोई भी वेद और वेदानुकूल शास्त्र के विरूद्ध मान्यताएं थीं। उन सबकी आलोचना व खण्डन किया था। नानकदेव जी के वचन हैं "वेद पढ़त ब्रह्मा मरे चारों वेद कहानी। सन्त की महिमा वेद न जानी। ब्रह्मज्ञानी आप परमेश्वर यहां नानकदेव जी के वचन हैं "वेदों को कहानी कहकर वेदों की निंदा की है और सर्वव्यापक, निराकार परमेश्वर को छोड़कर ब्रह्मज्ञानी को ही परमेश्वर कह दिया। नानक जी की ऐसी–ऐसी बातों की स्वामी दयानन्द ने आलोचना की है, अन्यथा तो स्वामी जी ने उनकी प्रशंसा ही की है। देखिये वे लिखते हैं– नानक जी का आशय तो अच्छा था... यह सच है कि जिस समय नानक जी पंजाब में हुए थे, उस समय पंजाब संस्कृत विद्या से सर्वथा रहित मुसलमानों से पीड़ित था। उस समय उन्होंने कुछ लोगों को बचाया।

इसमें उनके चेलों का दोष है, नानक जी का नहीं। जो नानक जी ने कुछ भक्ति विशेष ईश्वर की लिखी थी उसे करते आते तो अच्छा था। स्वामी दयानन्द स.प्र.११वां समु० में इस प्रकार नानक जी के गुण विशेषों की प्रशंशा ही कर रहे हैं। लेकिन खेजड़ा एक्सप्रेस के लेखक को स्वामी दयानन्द जी द्वारा नानक जी की आलोचना ही दिखी, प्रशंसा नहीं।

तीसरी भ्रान्ति–लेखक महोदय लिख रहे हैं आर्यसमाज अपने अनुयाइयों को श्रेष्ठता के अहंकार से प्रभावित होने के कारण सिमटता जा रहा है। लेखक आर्यसमाज को सिमटने की बात कह रहे हैं। हमें लगता है महाशय जी आर्यसमाज के विषय में कम जानकारी रखते है, क्योंकि वर्तमान में लाखों युवक आर्यसमाज से प्रभावित होकर, इसमें प्रवेश कर रहे हैं, देखिए **Agniveer.com** को खोलकर, भ्रम दूर होगा। वेदादि शास्त्रों की रक्षा के लिए शतशः छात्र, ब्रह्मचारी आर्यसमाज के आर्ष गुरूकुलों में आर्ष विद्या पढ़ रहे हैं। सहस्रों विद्यार्थी परीक्षा पद्धति से चल रहे आर्य गुरूकुलों में अध्ययन कर रहे हैं। देश के शिक्षा क्षेत्र में विशेष महत्व रखने वाली डी.ए.वी. संस्थाएं भी आर्यसमाज की ही हैं। इतना सब होते हुए भी आर्य खेजड़ा लेखक के दृष्टिदोष के कारण इनको आर्यसमाज सिमटता दिखाई दे रहा है? चूंकि आर्यसमाज वेदानुकूल बातों को ही मानता है, अतः उसकी बातें श्रेष्ठ क्यों न हों? इस श्रेष्ठता पर आर्यसमाजियों को स्वाभिमान है, इसे मिथ्या–अहंकार की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।

चौथी भ्रान्ति– ये महाशय लिखते हैं 'आर्य संस्कृति की बात करते हैं तो तुरन्त बोलते है, आर्यसमाज के हो क्या'। इन महाशय को आर्यसमाज का कहलाना अपमान लगता है, वैसे बात तो ये आर्य संस्कृति की करते हैं। यदि ये आर्यसमाज के अर्थ और उद्देश्य को जानते तो ऐसी चिढ़न इनको कभी भी न होती। आर्य श्रेष्ठ, समाज, समूल अर्थात् श्रेष्ठों का समूह, ये है आर्यसमाज का अर्थ और उद्देश्य। सब संसार का उपकार करा अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। इनके साथ ऐसा इसलिए है कि ये आर्य संस्कृति का अर्थ देवी–देवताओं की मूर्तियों की पूजा को मानते हैं, जिनका वैदिक सनातन आर्य संस्कृति से कोई लेना–देना नहीं है। आर्य संस्कृति तो एक निराकार परमेश्वर की उपासना करना, वेद को पढ़ना–पढ़ाना ब्रह्मयज्ञ आदि पांच महायज्ञों का करना आदि है, न कि पाखण्ड–अन्धविश्वास को मानना।

पांचवी भ्रान्ति– वे लिखते हैं 'आर्य संस्कृति सतयुग से चली आ रही है, जिसका सृजनकर्ता त्रिगुणात्मक शक्ति ओंकार है, जबकि आर्यसमाज का गठन कलियुग में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने किया है। महाशय को बता दें कि आर्य संस्कृति तो आदि सृष्टि से चली आ रही है। जिसका अब तक एक अरब छियानबें करोड़ आठ लाख तरेपन हजार एक सौ बारहवां वर्ष चल रहा है। रही बात स्वामी दयानन्द द्वारा कलियुग में आर्यसमाज के गठन की तो स्वामी जी महाराज ने मृतप्राय हो चुकी आर्य संस्कृति को पुनः जीवित करने के लिए, आदि सृष्टि में हुए महर्षि ब्रह्मा से लेकर महर्षि जैमिनी पर्यन्त जो सत्य सनातन वैदिक विचारधारा चली आयी थी, उसी के अनुसार उसी पुरानी आर्य संस्कृति का आर्यसमाज के नाम से गठन किया था, न कि कोई नवीन मत चलाया था।

एक और भ्रान्ति–खेजड़ा एक्सप्रेस (पाक्षिक) दिनांक २४.७.२०१२ के अंक में महाशय लिखते हैं "वेदों में मूर्तिपूजा का खण्डन भी नहीं लिखा है, जबकि हमने साकार–निराकार (आर्य समाज के सन्तों ने हायतौबा मचायी, धमकियां दी"। बिना वेद पढ़े खेजड़ा वाले की महाभ्रान्ति है कि वेदों में मूर्तिपूजा का खण्डन नहीं लिखा है। इनकी इस भ्रान्ति को दूर करने के लिए हम कुछ वेद के मन्त्र व उपनिषद् का प्रमाण देते हैं, जिनमें सीधा मूर्तिपूजा का खण्डन लिखा है।

अन्धन्तमः प्र विशन्ति येऽसम्भतिमुपासते।
ततो भूयऽइव ते तमो यऽउ सम्भूत्यारताः।।

युज० ४०

अर्थ– जो लोग असम्भूति अर्थात् अनुत्पन्न अनादि प्रकृति कारण की ब्रह्म के स्थान में उपासना करते हैं वे अन्धकार अर्थात् अज्ञान और दुख सागर में डूबते हैं। और सम्भूति जो कारण से उत्पन्न हुए कार्यरूपी पृथिवी आदि भूत पाषाण और वृक्षादि अवयव और मनुष्यादि के शरीर की उपासना ब्रह्म के स्थान पर करते हैं, वे उस अन्धकार से भी अधिक अन्धकार अर्थात् महामूर्ख चिरकाल घोर दुःखरूप नरक में गिरके महक्लेश भोगते हैं। (महर्षि दयानन्द)

न तस्य प्रतिमाऽस्ति।। यजुर्वेद ३२.३

अर्थ– जो सब जगत् में व्यापक है उस निराकार परमात्मा की प्रतिमा परिणाम सादृश्य वा मूर्ति नहीं है।

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरम्.... समाभ्यः।। यजुर्वेद ४०८। यह पूरा मन्त्र ईश्वर के स्वरूप का वर्णन कर रहा है, जिसमें कहीं मूर्तिपूजा की गन्ध भी नहीं है। बल्कि इसमें ईश्वर को 'अकायम्' कह कर उसकी मूर्ति का निषेध किया गया है।

यच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षूंषि पश्यन्ति।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते।।केन.

अर्थ– जो आंख से नहीं दीख पड़ता और जिससे सब आंखें देखती हैं, उसी को तू ब्रह्म जान और उसी की उपासना कर। और जो उससे भिन्न सूर्य, विद्युत, अग्नि आदि जड़ (मूर्त) पदार्थ हैं उनकी उपासना मत कर।

इस प्रकार वेदों में व ऋषिकृत शास्त्रों में जड़ पूजा का सीधा खण्डन है, किन्तु खेजड़ा वाले तो स्पष्ट प्रमाण भी स्वीकार नहीं कर पा रहें हैं।

इन्होंने कहा आर्यसमाज के सन्तों ने हायतौबा मचा दी, धमकियां दीं। इसके उत्तर में हम इतना ही कहना चाहेंगे कि आर्यसमाज का सन्त हायतौबा नहीं मचाता, वह तो सत्यमत का प्रचार व असत्य मत का खण्डन करता है। महाशय को सत्यप्रिय न होने के कारण आर्यसमाज के सन्तों का असत्य मत का खण्डन हायतौबा दीखता है। रही धमकी की बात, हो सकता है इनको किसी आर्यपुरूष ने उचित सलाह दी हो और उस सलाह को इन्होंने धमकी मान लिया हो। परमेश्वर इनको सद्बुद्धि देवें।

ऋषि दयानन्द की हिन्दी भाषा और साहित्य को देन

हिन्दी गद्य निर्माताओं में विशिष्ट स्थान

–डॉ. मंजुलता विद्यार्थी

हिन्दी गद्य के स्वरूप–निर्धारण सम्बन्धी संघर्ष के इस काल में हिन्दी रंगमंच पर दो महानुभावों, (भारतेन्दु, हरिश्चन्द्र तथा ऋषि दयानन्द) का प्रवेश हुआ, जिनकी हिन्दी सेवा अविस्मरणीय है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को आधुनिक हिन्दी साहित्य का पिता और युग–पवर्तक माना गया तथा हिन्दी गद्य का निर्माता भी, किन्तु ऋषि दयानन्द ने हिन्दी के लिए जो कार्य किया उस दृष्टि से हिन्दी साहित्य के लेखकों ने उन्हें प्रमुखता नहीं दी। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से ऋषि दयानन्द का कार्य कम नहीं था, अपितु अनेक अर्थों में अधिक ही था। भारतेन्दुजी की मातृभाषा हिन्दी थी और वे साहित्य जगत् के ही व्यक्ति थे। उनका उद्देश्य वेद का प्रचार था। और इसी उद्देश्य की पूर्ति में उनकी साहित्य साधना भी होती चली गई और इसी में वे हिन्दी को नया स्वरूप भी दे गये। हिन्दी भाषा में वेदों का भाष्य एक युगान्तकारी घटना है। हिन्दी भाषा में वेदों का भाष्य एक युगान्तकारी घटना है। हिन्दी भाषा व साहित्य को ऋषि दयानन्द का अपूर्व योगदान निम्नलिखित बिन्दुओं में स्पष्ट है–

१. ऋषि दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने धर्म एवं दर्शन जैसे गूढ़तम विषयों को हिन्दी गद्य में प्रस्तुत कर दिखाया।

२. ऋषि दयानन्द ही प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने हिन्दी भाषा भाषियों के लिए वेद सुलभ कर दिया। लाला लाजपतराय तो इसे उनके जीवन का सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं साहसिक कार्य बतलाते हैं।

३. हिन्दी गद्य में खण्डन–मण्डनात्मक साहित्य का सृजन सर्वप्रथम उन्होंने ही किया।

४. अपने समय में हिन्दी भाषा में सर्वाधिक व्याख्यान उन्होंने ही दिये।

५. हिन्दी भाषा में व्याख्यान द्वारा पूरे देश में सर्वप्रथम प्रचार किया।

६. आर्यसमाज द्वारा संगठित रूप से हिन्दी प्रचार पर बल दिया।

७. भारतेन्दुयुग में ऋषि दयानन्द ने ही हिन्दी के भारतीयकरण की ओर ध्यान दिया। यद्यपि भारतेन्द्र जी ने हिन्दी गद्य को विकसित व सुसंस्कृत किया, किन्तु उनका क्षेत्र कथा तथा नाटक–साहित्य तक सीमित था। दार्शनिक, समाजिक, राजनैतिक व अन्य गम्भीर विषयों के सुचारू रूप से प्रतिपादन के लिए ऋषि दयानन्द ने जिस परिमार्जित हिन्दी का प्रयोग किया और जिस सशक्त व सुसंस्कृत शैली को अपनाया, वह वस्तुतः एक नई चीज थी। उन्होंने हिन्दी की गद्यशैली को प्रौढ़ता प्रदान की।

८. ऋषि दयानन्द ने भारतीय भाषाओं के मूलस्रोत संस्कृत का महत्व समझकर अपने ग्रन्थों में सरल तत्सम शब्दों के चयन की नीति अपनाई जबकि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का झुकाव तद्भव शब्दों की ओर था। आज हिन्दी भाषा का विकास ऋषि दयानन्द द्वारा प्रयुक्त संस्कृतनिष्ठ भाषा के अनुसार हो रहा है। इस दृष्टि से हिन्दी के स्वरूप को साहित्यिक स्तर और स्थिरता प्रदान करने में स्वामी दयानन्द का प्रमुख हाथ है।

९. हिन्दी में शास्त्रीय पद्धति से समीक्षा और व्याख्या करने की पद्धति का आरम्भ ऋषि दयानन्द द्वारा हुआ। श्री कृष्ण कुमार कौशिक ने भातेन्दु व ऋषि दयानन्द की हिन्दी सेवाओं को उल्लेख करते हुए लिखा है कि –"यदि साहित्य, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि विधाओं का श्रीगणेश भारतेन्दु पद्धति से समीक्षा और व्याख्या करने की पद्धति का आरम्भ स्वामी जी और उनके युग के लेखकों द्वारा हुआ।"

इतना ही नहीं, ऋषि दयानन्द द्वारा लिखित "आत्मकथा" अपने समय की खड़ी बोली के मानक स्वरूप तथा गद्य लेखन का आदर्श प्रस्तुत करती है। यह हिन्दी में प्रकाशितत सर्वप्रथम आत्मकथा है। उनका पत्र साहित्य हिन्दी गद्य साहित्य के प्रस्थानिक बिन्दु के रूप में ग्रहण किया जा सकता है। ऋषि दयानन्द के बहुसंख्यक ग्रन्थ हिन्दी में हैं। इन ग्रन्थों के गद्य को यदि एक स्थान पर एकत्र करके देखा जाए तो यह स्वीकार करना पड़ेगा कि इतना अधिक हिन्दी गद्य उन्नीसवीं शताब्दी के किसी अन्य साहित्यकार द्वारा नहीं लिखा गया। उनके ग्रन्थों में ऐसे सन्दर्भ हैं जिन्हें ललित–साहित्य के अन्तर्गत माना जा सकता है। उनके इस गद्य साहित्य के अन्तर्गत माना जा सकता है। उनके इस गद्य साहित्य में व्यंग्य–विनोद से आप्लावित एक नयी शैली विकसित हुई हैं, भाषा में निखार आया और वह प्राणवन्त बनी। निश्चय ही ऋषि दयानन्द का स्थान हिन्दी गद्य के निर्माताओं में सुरक्षित है। प्रो० प्रकाश ने ऋषि दयानन्द के हिन्दी कार्य की चर्चा करते हुए लिखा है– "महर्षि की विशिष्ट हिन्दी थी, उनकी अपनी ही लेखन–शैली थी। उन्होंने न जाने कितने नये शब्द हिन्दी को प्रदान किये थे और कितने पुराने शब्दों का नये सन्दर्भ में प्रयोग किया था। उनकी हिन्दी परिमार्जित है। हिन्दी के परिमार्जन का यदि इतिहास लिखा जाए तो उसमें महर्षि के योगदान ककी चर्चा अवश्य होगी।"

वस्तुतः राष्ट्रभाषा हिन्दी की स्थापना और प्रचार तथा उसे उत्कृष्ट कोटि के ज्ञान–विज्ञान की भाषा के पद पर आरूढ़ करने में ऋषि दयानन्द का अनुपम योगदान है। उन्होंने अपने सांस्कृतिक, समाजसुधार एवं राष्ट्रीय कार्यों के द्वारा उसे एक गरिमा प्रदान की तथा तत्कालीन सर्जक साहित्यकार को प्रेरणा दी। यह प्रेरणा साहित्य की विविध विधाओं में सहज की देखी जा सकती है। उनके भाषण–लेखन से भारतेन्दु युग के सभी साहित्य–मनीषियों को प्रेरणा मिली। उस समय के सभी साहित्यिकों की रचनाएँ प्रायः समाज सुधार तथा राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत हैं। ऋषि दयानन्द से पूर्व हिन्दी गद्य में छोटे–छोटे कहानी किस्से ही लिखे जाते हैं। उन्होंने हिन्दी गद्य को प्रौढ़ता प्रदान की। डॉ. ग. तु. आष्टेकर ने लिखा है– "ऋषि दयानन्द और उनके आर्यसमाज ने इस महादेश में जहाँ राष्ट्रीयत्व की भावना को सुदृढ़ किया, वहीं राष्ट्र को एक भाषा देने में भी अपनी ऐतिहासिक भूमिका निभाई। हिन्दी को राष्ट्रभाषा पद पर प्रतिष्ठित कराने के पीछे इनकी हिन्दी की सेवाओं का असाधारण योगदान रहा है। कुल मिलाकर कह सकते हैं कि ऋषि दयानन्द तथा उनके आन्दोलन ने इस देश की जनता को सशक्त जीवन–दर्शन अदम्य देशभक्ति और अभिव्यंजना शक्ति–सम्पन्न राष्ट्रभाषा का वरदान देकर आधुनिकता के साथ सफलतापूर्वक सामंजस्य स्थापित करने का उसमें आत्मविश्वास उत्पन्न किया।

सारांश–हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा के पद पर पहुँचाने तथा उसे उच्चकोटि के विशाल लेखन द्वारा समर्थ भाषा बनाने के साथ–साथ ऋषि दयानन्द ने उसके साहित्यिक स्वरूप को भी सजाया एवं संवारा हैं। हिन्दी गद्य को ऋषि दयानन्द की देन के सन्दर्भ में श्री विष्णुप्रभाकर लिखते हैं कि –"निरन्तर भाषण देते–देते भाषा का प्रयोग करना पड़ा जो व्यंग्य–विनोद से पूर्ण थी। वे मुहावरों का भी सटीक प्रयोग करते थे। इससे भाषा में रोचकता तो पैदा ही जाती थी उसकी संरचना में भी एक सी लचक, एक ऐसा लोच पैदा हो जाता था जो उसे अद्भुत रूप से प्राणवन्त और सम्प्रेषणीय बना देता था। मानना होगा कि स्वामी दयानन्द ने हिन्दी को व्यंग्य–विनोद से आप्लावित एक नई शैली दी। भाषा को निखारा और प्राणवन्त बनाया। इसलिए उनका स्थान हिन्दी गद्य के निर्माताओं में सुरक्षित है।"

विदुर नीति...

जिता सभा वस्त्रवत्ता मिण्टासा गोमता जिता।
अध्वा जितो यानवता सर्वं शीलवता जितम्।।

(द्वितीय अध्याय, ४७ वाँ श्लोक)

अच्छे वस्त्र वाला सभा को जीतता (अपना प्रभाव जमा लेता) है– जिसके पास गौ है– वह मीठे स्वाद् की आकांक्षा को जीत लेता है। सवारी से चलने वाला मार्ग को जीत लेता (तय कर लेता) है। शीलवान पुरुष सब पर विजय प्राप्त कर लेता है।

पृष्ठ ३ का शेष

बड़ा कोई नहीं

विचार में आया कि मैं बादल जरूर बन गया किन्तु पर्वतों के पार नहीं जा सकता यदि पर्वत होता तो लोगों को बर्फीली ठण्डी हवाओं से बचाता और पानी की हवाओं को रोकर पानी बरसा देता। पहाड़ मेरी दृष्टि में सबसे बड़ा है। परमात्मा ने अब उसे पहाड़ बना दिया। पहाड़ बनने पर उसे बड़े होने का गर्व हुआ किन्तु अपने पैरों को देखकर चकित रह गया कि उसके पैरों को तोड़कर एक बूढ़ा आदमी बजरी बना रहा है। अस्तु बड़ा होने का गर्व व्यर्थ का भ्रम है।

वृक्षों में जीव का प्रश्न

पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय जी एम.ए. द्वारा काला प्रेस प्रयाग आर्य मित्र 30 दिसम्बर 1956 सभार

इधर मेरे पास कई पत्र आये जिनमें मुझ से पूछा गया कि वृक्षों में जीव है या नहीं। पंजाब से एक भाई ने विचित्र घटना लिखी। वह जंगल से लकड़ी काटने का व्यापार करते हैं। उनकी माता कहती हैं कि इस अनिष्ट का कारण वक्षों की हत्या है, तुम इसको छोड़ दो। उन्होंने मुझ से पूछा कि क्या करूं, मैं तो वृक्षों में जीव नही मानता। आर्य मित्र के पाठक पचीसों वर्षों से मेरे विचारों से परिचित हैं। स्वामी दर्शनानन्द जी भी वृक्षों में जीवन नहीं मानते थे। सुना था कि पं० लेखराम जी भी इसी विचार के थे। मुझे उनके लेखों में कोई प्रमाण इस बात का मिला नहीं। स्वामी दर्शनानन्द जी ने तो इस विषय में पुस्तकें भी लिखीं और शास्त्रार्थ भी किये। परन्तु मुझे यह कहने से संकोच नहीं कि महात्मा नारायण स्वामी, श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी तथा साधारणतया सभी पंडित वृक्षों में जीव मानते हैं। मैंने तो अपने पंजाबी मित्र को स्पष्ट लिख दिया कि वृक्ष निर्जीव हैं और उनका काटना हत्या नहीं है। वृक्षों में केवल बबूल, नीम, आम या पीपल ही तो शामिल नहीं हैं मूली, लौकी, गाजर, आलू सभी का प्रश्न होगा। पहले जब कभी उत्सवों के अवसर पर लोग मुझ से पूछते थे तो मैं चुप हो जाता था, इसलिए नहीं कि मुझे कुछ सन्देह था, परन्तु इसलिए कि मैं किसी दार्शनिक विषय के आधार पर सर्वसाधारण में बुद्धि भेद उत्पन्न करना नहीं चाहता था। मैंने कभी अपने मत को छिपाया नहीं। इस विषय पर पज्य नारायण स्वामी जी महारज से कई बार कई घण्टे बात चीत रही। यद्यपि हम दोनों एक दूसरे के विचारों को बदल न सके और स्वामी जी महारजा यही कह कर रह गए कि दर्शनिक विषयों में मत भेद होना स्वाभाविक है। पहले मैंने किसी पुस्तक में इस विषय को छेड़ा नहीं था। बीस वर्ष से अधिक हुआ जब मैंने 'जीवात्मा' नामक पुस्तक प्रकाशित की। पंजब के कई भाइयों ने लिख कि हम समझते थक हम पुस्तक में तुम 'वृक्षों में जीव' के प्रश्न पर विचार करोगे, तुमने इस प्रश्न को उठाया ही नहीं क्यों? मैंने उनको उत्तर दे दिया था कि मैं इस विषय का जानबूझकर छेड़ने से संकोच करता था। परन्तु पीछे से मुझे आवश्यक प्रतीत हुआ कि युक्तियों सहित अपने विचार लिखकर छोड़ जाऊँ।

१९१६ में मैं ग्रीष्मावकाश में गुरूकुल वृन्दावन में था। उस समय वहाँ श्री प्रो० जगदीशचन्द्र जी बोस की प्रसिद्ध पुस्तक आई हुई थी और उस को लोग रूचि से पढ़ते थे। पढ़ते तो क्या थे? पढ़ क्या सकते थे? उसमें वनस्पति शास्त्र सम्बन्धी पारिभाषिक जटिलतायें बहुत थीं। परन्तु मुझे तभी यह विश्वास हो गया था कि आर्य समाज को जगदीशचन्द्र वसु की बात का अनुसरण करना निरर्थक ही सिद्ध होगा। उन दिनों श्री प्रोफेसर धर्मेन्द्र नाथ तर्कशिरोमणि गुरूकुल की उच्चतम कक्षा में पढ़ते थे। एक दिन वह कहने लगे कि जब मैं अनार के दाने खाता हूँ तो अण्डों की भावना करना भयावह होगा। वस्तुतः हुआ ऐसा ही है। जगदीश चन्द्र बोस के अधूरे सिंद्धान्त ने मांसाहार को छुड़ाया तो नहीं, बढ़ा बहुत दिया। १९४६ ई० में जब मैं शाहपुरा में था तो यह प्रश्न बहुत उठता था। उस समय मैंने उचित समझा कि एक पुस्तक लिख जाऊ। तब मैंने एक पुस्तक लिखी जिसका नाम है, 'हम क्या खायें? घास या मांस? इसमें मैंने कई अध्याय वृक्षों में जीव विषय पर भी दिए है। उसमें श्री जगदीश चन्द्र बसु के मत की भी समीक्षा है। कुछ भाइयों की यह धारणा है कि ऋषि दयानन्द वृक्षों में जीव मानते थे। मेरी धारणा ऐसी नहीं है, मैंने इस विषय पर भी कई अध्याय लिखे हैं और स्वामी जी महाराज की पुस्तकों के लम्बे उदाहरण दिए हैं। जो आर्य इस विषय में जानना चाहते हैं वह मेरी पुस्तक हो ध्यान पूर्वक पढ़ें और महर्षि जी की आरम्भिक शिक्षा 'प्रसंगवित होना चाहिए, को याद रक्खें। 'सैंधवमानय' के चक्कर में न पड़ जाय, इस सम्बन्ध में एक बात स्मरण रहे जीवात्मा का स्वरूप जैसा आर्य समाज मानता है वैसा न तो शांकर मत वाले मानते हैं, न रामानुज के मत वाले, न बौद्ध न जैन, रहे साधारण सनातन धर्म उनका तो कहना ही क्या है? 'रोब धान बारह पसेरी' अतः दूसरों के सिद्धांतों को मन में रखकर तो मान्यताओं में भेद हो सकता है। प्रत्येक पत्र का उत्तर देना मेरे लिए कठिन है। अतः यह लेख लिख रहा हूँ केवल उनके हितार्थ जिनके मस्तिष्क खुल हुए हैं, और जिनको मनन करने की इच्छा है। जीव के स्वरूप का प्रश्न ईश्वर के स्वरूप से भी अधिक जटिल है। क्योंकि ब्रह्म तो प्रकृति और प्राकृतिक जगत से बहुत ऊपर है (अतिरिच्यते) परन्तु जीव और प्रकृति का तो पदे–पदे सम्बन्ध है। कहीं शरीर, शरीरी का, कहीं भोग्य भोक्ता का, कहीं कर्ता करण का, कहीं अन्योन्याश्रम का (सांख्य की भाषा में अन्धे और लगड़े का)। वृक्षों में जीव का प्रश्न विचारते समय इन सब बातों पर ध्यान देना होगा। जो इतने गहरे जाने के लिए तैयार नहीं है वह जो चाहे मान सकते हैं।

पृष्ठ २ का शेष

उम्मीद की नई किरण लायेगा...

देश–विदेश में महौल बना है, वैसा पहले कभी नहीं हुआ। उत्तर प्रदेश से पलायन कर चुकी फर्मास्यूटिकल इंडस्ट्री ने तकरीबन डेढ़ दशक बाद प्रदेश में वापसी का फैसला किया है। पूर्ववर्ती प्रदेश सरकारों की औद्योगिक नीतियों के प्रतिकूल होने से १५ वर्ष पले कोजी फार्मा, की वेक्स, सिफा लैब, जेनसम हेल्थ केयर, एरो कैम और ओमेक्स लेबोरेट्रिज जैसी प्रदेश की बड़ी फार्मा कंपतियों ने उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश का रूख कर लिया था। योगी सरकार द्वारा नीतियों में परिवर्तन के बाद फार्माकंपनियां एक बार फिर उत्तर प्रदेश का रूख कर रही हैं। सरकार ने नई फार्मा नीति तैयार की है। इसके तहत कंपनियों द्वारा खरीदी गई जमीन की किस्त के ब्याज पर ५० फीसदी की छूट मिलेगी। रजिस्ट्री को जीरो स्टांप ड्यूटी में रखा गया है। प्रोजेक्ट लोन के ब्याज पर सात साल तक ६० फीसद दूट है। साथ ही शर्त लगा दी है कि यहां सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट और इंडस्ट्री में काम करने वाले वर्कर्स के लिए रहने की व्यवस्था हो। तीन वर्ष में उत्पाद शुरू करने के लिए रहने की व्यवस्था हो। तीन वर्ष में उत्पाद शुरू करने पर सात वर्ष तक स्टेट जीएसटी की छूट भी मिलेगी। प्रदेश सरकार के साथ यूएस एफडीआई आधारित फार्मा इंडस्ट्री लगाने के लिए करार हो चुका है।

कृषि–बागवानी की बात हो या 'एक जनपद–एक उत्पाद' की, इन क्षेत्रों से जुड़े किसान, उत्पादक एवं छोट कारीगर, अब तक सी अवसर उपलब्ध न होने के कारण अपने परंपरागत उद्योग छोड़ दिल्ली, मुंबई, सूरत जैसे महानगरों की ओर पलायन करते रहे हैं। ये ऐसे क्षेत्र हैं जिनके लिए किसी कच्चे माल के आयात की जरूरत नहीं है, लेकिन तैयार उत्पादों को राष्ट्री–अंतरराष्ट्रीय बाजार जरूर चाहए। बाजार उपलब्ध हो तो हाथ खुद ही हुनर दिखाने से नहीं चूकते। प्रदेश के अपेक्षाकृत पिछड़े हिस्सों, पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं बुंदेलखण्ड के लिए सरकार ने विशिष्ट कर नीति का भी आश्वासन दिया है। ताकि इन क्षेत्रों में उद्योग आकर्षित किए जा सकें। अब आवश्यकता है तो सिर्फ इतनी कि प्रदेश सरकार निवेश के इच्छुक बाहरी उद्यमयिों का स्थानीय संसाधनों, किसानों एवं कारीगरों से मेलमिलाप का रास्ता निकाले। ताकि बाहर से आने वाले उद्यमियों की महारत का लाभ प्रदेश के किसानों–कारीगरों को मिले और कम लागत पर तैयार प्रदेश के उत्पादों डंका विश्व बाजार में बज सके। तभी यह प्रयास पूर्णरूपेण सार्थ हो सकेगा।

–सम्पादक

सहायता का वह तरीका

अदिति आर्या – तिलहर शाहजहाँ पुर

जब मनुष्य किसी आपत्ति में होता है तब परमात्मा को याद करता है। उसका कष्ट दूर हो जाता है तो वह परमात्मा को भूल जाता है। इसी प्रकार जिस मुसीबत में फंसने पर अपने को निकाल लेता अपना स्वार्थ सिद्ध कर आगे बढ़ जाता है किन्तु यह मानवता नहीं है। मानवता इसी में है कि हम जिस परिस्थिति में से निकलें उसमें दूसरा आदमी भी आ सकता है। अतः वह काम करें जिससे आगे आने वाले दूसरे किसी की सहायता हो सके। ऐसा ही एक प्रेरक प्रसंग यहां दिया गया है।

एक यात्री यात्रा करते रेगिस्तान में भटक गया। वहां उसे पानी पीने की आवश्यकता हुई। पानी के लिए तरसने लगा पानी का नाम न था। उसी बीच उसे एक वीरान सी झोपड़ी दिखाई दी। वह इस आशा से उस झोपड़ी में चला गया कि संभवतः उसमें पानी का कोई साधन रहा हो। वहां पहुंचने पर उसने देखा कि एक हैण्डपम्प लगा है। पर वह सूखा था। उसने चलाया पानी की बूंद नहीं निकली। वह निराश हुआ। तभी वहां एक छत से बंधी बोतल दिखाई दी जो पानी से भरी थी। वह

शेष पृष्ठ ७ पर

गुरूकुल महाविद्यालय रूद्रपुर तिलहर शाहजहाँपुर

गुरूकुल महाविद्यालय रूद्रपुर तिलहर शाजहाँपुर ऋषि दयानन्द जयन्ती पर्व मनाया गया। जिसमें रूद्रपुर आर्य समाज तथा ग्रामवासियों ने भाग लिया, गुरूकुल संचालक आचार्य आर्येन्द्र जी ने गुरूकुल के कार्यों पर प्रकाश डाला तथा दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला। डॉ० धारणा जी (प्राचार्य) जी का उद्‌बोधन भी प्रभावशाली रहा।

कार्यक्रम में गुरूकुल के सभी आचार्यगण व कर्मचारीगण उपस्थित रहे। आचार्य चंदन मित्र जी, आचार्य अवधेश जी, आचार्य अशोक जी, श्री अभय प्रताप जी, श्रीमती रश्मी देवी जी, श्रीमती ज्योति देवी जी, श्री आदित्य प्रताप सिंह आदि महानुभाव उपस्थित रहे।

आर्य समाज झांसी

झाँसी : आर्य मनीषी स्व. जयचन्द्र आर्य की पुण्य स्मृति में चतुर्वेद शतकम् यज्ञ का शुभारम्भ वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ हुआ। आर्य पुरोहित वीरेन्द्र शास्त्री ने कहा कि वेद शब्द आते ही धार्मिक प्रवृत्ति आती है।

धार्मिक प्रवृत्ति से सात्विक प्रवृत्ति बढ़ती है और सात्विक से कर्म की प्रेरणा आती है। वेद सभी सत्य विद्याओं का मूल है। किसी वस्तु को ज्ञान प्राप्त किये बिना उसका पूरा लाभ नहीं मिल सकता है। यजमान सुनील कुमार व उनकी पत्नी राजकुमारी रहे। कार्यक्रम मं गनपतराम भ्याना, संजीव खैरा, सुदर्शन शिवहरे, मुकेश कुमार शाक्य, मोहन नेपाली (पत्रकार), प्रदीप भ्याना, हरनारायण यादव, रवि बजाज, प्रवीण झा, वेद प्रकाश, सुनीता सूरी, ऊषा चौरसिया, रीता भ्याना, रश्मि अग्रवाल, नीलम गुप्ता, लक्ष्मी साहू, मिथलेश झा समेत अन्य श्रद्धालु उपस्थित रहे। मन्त्री अनिल सूरी ने संचालन किया।

पृष्ठ ६ का शेष

सहायता का ....

पानी पीने को ही था कि बोतल पर एक कागज चिपका था उस पर लिखा था इस पानी का प्रयोग हैण्ड पम्प चलाने में करें और बोतल भर कर रखना मत भूलना। यात्री ने सोचा पम्प में पानी डालने पर नहीं चला तो पानी के अभाव में प्राण गंवाने होंगे क्यों न इस पानी को पी लूं किन्तु इससे फिर इस कागज पर लिखी बात का पालन कैसे होगा? बोतल भर कर कैसे टांग सकूंगा। इसी उधेड़बुन में उसने बोतल खोली और कांपते हुए उसका पानी नल में डाल दिया। नल चला ठण्डा पानी आया। पानी पीकर संतुष्ट हो गया। बोतल भरी और निर्देशानुसार उसे छप्पर में बांध दी। उसी बीच झोंपड़ी में एक बोतल और दिखाई दी उसमें एक पैसिंल का टुकड़ा और एक नक्शा पड़ा था। नक्शे में रेगिस्तान से निकलने का रास्ता था। उसने रास्ता पार कर लिया और बोतल को रखकर झोपड़ी से बाहर जाने लगा। उसके मन में यह आया कि मेरे बाद कोई यात्री यदि इसमें आया तो हैण्डपम्प को देखकर विश्वास नहीं करेगा कि उसमें पानी डालने से चल पड़ेगा। वह फिर झोंपड़ी के अन्दर लौटा। बोतल को छप्पर से उतारा और उसके कागज पर जो लिखा था उसके नीचे एक लाइन और लिखी यकीन कीजिए यह हैण्ड पम्प काम करता है। इस प्रकार यात्री ने दूसरे की सहायता का यह तरीका निकाला और खुशी–खुशी रेगिस्तान में भटकना दूर हुआ। वह सही रास्ते पर चल पड़ा। इससे यह शिक्षा मिलती है केवल अपनी स्वार्थ पूर्ति तक संतुष्ट रहना नहीं चाहिए अपितु ऐसा काम करते जाना चाहिए जिससे दूसरों की सहायता हो सके।

कच्चाहारी बाबा की 34वीं वर्षगांठ पर हार्दिक मंगल कामना

परोपकार एवं सेवा के पर्याय स्वामी गुरूकुलानंद कच्चाहारी ने संन्यास के ३४ वर्ष पूरे कर लिए हैं। ३४वीं वर्षगांठ पर लोगों ने हवन यज्ञ कर उनकी लंबी उम्र के लिए भगवान से प्रार्थना की।

रविवार को कच्चाहारी कुटी में आयोजित कार्यक्रम में प्रातः यज्ञ के बाद स्वामी गुरूकुलानन्द कच्चाहारी का नागरिक अभिनन्दन किया गया। इस मौके पर हरीश उप्रेती ने कहा कि स्वामी जी हमेशा युवा वर्ग को आशीर्वाद देते हैं। उनके मार्गदर्शन से कई युवाओं ने जीवन में बुलंदियां हासिल की हैं।

डॉ० तारा सिंह ने कहा कि जहां एक ओर तमाम भगवा पहने ढोंगी बाबा भारत की जेलों की शोभा बढ़ा रहे हैं। वहीं, महान परोपकारी संत कच्चाहारी बाबा गरीबों, असहाय, जरूरतमंदों की चिकित्सा सेवा में निस्वार्थ भाव से लगे हुए हैं। उनका यह योगदान सभी के लिए प्रेरणास्रोत है। इस मौके पर पर सभी लोगों ने डॉ० कच्चाहारी बाबा के लंबे उम्र के लिए प्रार्थना की।

कार्यक्रम में डॉ० दीपक चन्द्र कापड़ी, मनीष चन्द्र सती, हीरा बल्लभ पाण्डेय, तरूण जोशी, रजनीश फुलेरा, अंकित पाण्डेय, भावना धामी, एडवोकेट आशा मोहन आदि उपस्थित थे। ज्ञात हो कि डॉ० गुरू कुलानंद कच्चाहारी ने मकर संक्रान्ति के दिन वर्ष १९८५ में ब्रह्मचर्य से सीधे सन्यासी जीवन ग्रहण कर लिया। तब से वह लगातार लोगों को निःशुल्क चिकित्सा सुविधा देते आ रहे हैं। ८२ वर्षीय स्वामी गुरूकुलानन्द की १०८ वर्ष से अधिक जीने की इच्छा है उन्होंने मरणोपरान्त नेत्रदान और शरीर को किसी मेडिकल कॉलेज में देने का फैसला किया है।

आर्य मित्र परिवार आपके स्वस्थ्य और दीर्घ आयु की कामना करते हैं आप स्वस्थ्य रहे प्रसन्न रहे यही हमारी कामना है।

व्यवस्थापक– हरीश कुमार शास्त्री

टंकारा (गुजरात) में आयोजित प्रतियोगिता में गुरूकुल प्रभात आश्रम के विद्यार्थी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी के बोधोत्सव के उपलक्ष्य में उनकी जन्म–भूमि टंकारा गुजरात में महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित स्वामी विरजानन्द पुरस्कार (योगदर्शन एवं वेदभाष्य प्रतियोगिता) में प्रभात आश्रम के विद्यार्थी तरूण कृष्ण ने प्रथम स्थान प्राप्त किया कर पांच सहस्र की प्रतियोगिता जीती। प्रभात आश्रम की परंपरानुसार इस अवसर पर हर्षोल्लासपूर्वक सम्मान–सभा का आयोजन किया गया और तरूण कृष्ण को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर परपूज्य श्री स्वामी जी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि–यह सम्मान–सभा इसलिए आयोजित की जाती है कि इस से प्रेरित होकर विभिन्न प्रतियोगिताओं में सहभागिता हेतु अन्य छात्रों को भी उत्साहपूर्वक आगे आने का प्रयास करना चाहिए।

आर्य समाज खेड़ा आफगान

आर्य समाज खेड़ा आफगान में दिनांक १२.०२.२०१८ को ऋषि जन्म दिवस तथा बोधपर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया यज्ञ के बह्मा श्री आदित्य कुमार शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न कराया तथा यज्ञ और महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला भजनोपदेशक श्री अमित कुमार जी ने भजन प्रस्तुत किये।

इस अवसर पर आर्य समाज के सभी पदाधिकारीगण कुंवर पाल आर्य, वेदमुनि जी, राजेश कुमार आर्य, यशपाल गुप्ता, नरेश कुमार श्रवण कुमार, सत्यवीर जी, सन्नी मोहित कुमार, वेद भूषण जी, शशि कान्त आर्य, सतीश आदि महानुभाव, उपस्थित रहे।

कौन रोता है किसी और की खातिर ऐ दोस्त.
सबको अपनी ही किसी बात पे रोना आया...💔💔

अगर ओठों पर मुस्कुराहट हो. तो भी कारण भीतर है। आंखों में आंसू हों. तो भी कारण भीतर है। जिसने देखा कि कारण बाहर है. वही अधार्मिक है। जिसने यह बात समझ ली कि मेरी जिंदगी में जो भी घट रहा है वह मेरा ही कृत्य है. वह मेरे ही होश और जतन या बेहोशी और गैर-जतन का परिणाम है. वह व्यक्ति धार्मिक हो गया। फिर दुख ज्यादा देर तुम्हारे पास न रह सकेगा। फिर तुम अचानक पाओगे एक क्रांति शुरू हुई। कल तक जो एक मुफलिस की कबा थी. एक भिखारी का वस्त्र थी. वही एक सम्राट का स्वर्णिम वस्त्र बनने लगी। कल तक जहां सिवाय कंकड़-पत्थर के कुछ भी न मिला था. वहीं हीरे-जवाहरात उपलब्ध होने लगे।

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
....
....

पृष्ठ १ का शेष

हम अपनी संस्कृति वेद.....

विशेषांक अगस्त ५५, पृष्ठ १३५) प्रो० मैक्समूलर महाशय और स्पष्ट लिखते हैं–

ऐसी कोई पुस्तक उपस्थित नहीं जो हमें मानवीय इतिहास में वेदों से प्राचीतर समय की ओर ले जावे, (देखिए Chips from a German Workshop Vol. 1 Page4)

पारसियों के धर्म ग्रन्थ जिन्दावेस्ता के विद्वान अनुवादक पादरी एल.एच. मिल्स महोदय श्री अवेस्ता की अपेक्षा वेदों का काल पुराना निर्धारित करते हुए लिखते है "मिश्र और उसके उन सहयोगियों की अनुपस्थित जिनका वर्णन पिछली अवेस्ता में है हमें इस बात को स्वीकार करने की आज्ञा देते हैं कि गाथाओं का काल (जो जिन्दा–वेस्ता का प्राचीनतम भाग है) ऋचाओं से बहुत बाद का है" (आगे वे लिखते हैं " हम को इस परिवर्तन के लिए समय की जरूरत है यह भी थोड़े समय प्राचीन ऋचाओं (वेदमन्त्रों) से बहुत बाद का रख सकते हैं। (देखिए 'जिन्दावेस्ता का अंग्रेजी अनुवाद' भाग ३ भूमिका पृष्ठ ३६–३७)

वेद शब्द 'विद्' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'जानना' (to know) वेद का शाब्दिक अर्थ है 'ज्ञान'। भारतीय संस्कृति और धर्म के विषय की गम्भीरता का वास्तविक ज्ञान वैदिक वाङ्मय के पढ़ने से ही हो सकती है।

वैदिक साहित्य का संक्षिप्त परिचय यह है कि विषय के अनुसार वेद चार भागों में विभक्त है ऋग्वेद यजुर्वेद, सामवेद, और अथर्ववेद। इनके चार उपवेद, भी हैं– क्रमशः आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्व वेद और अर्थवेद। इनमें आयुर्वेद तो इतना प्रसिद्ध है कि भारत के सभी लोगों ने इसका नाम और काम खूब देखा सुना है। वेदों के छः अंग है, शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, छन्द और ज्योतिष। वेदाङ्गों के वेदोपांग भी हैं जो दर्शन या शास्त्र कहलाते हैं। ये भी छः ही हैं। सांख्य शास्त्र, मीमांसा शास्त्र और वेदान्त शास्त्र। इसके अतिरिक्त ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक, स्मृति, उपनिषद, सूत्र, रामायण, महाभारत, गीता आदि ग्रंथ हैं जिन्हें वैदिक साहित्य में गिना जाता है। ये ही वे विशाल और दृढ़ स्तम्भ हैं जिन पर आदि सृष्टि स भारतीय संस्कृति की विशाल अट्टालिका खड़ी है।

इन गन्थों में अथाह ज्ञान भरा पड़ा है जिसने पढ़ा है वही जानता है स्वयं बड़े–बड़े ऋषि मनीषी गण इसकी अपारता को देखकर नेति नेति (न–इंति–अनन्त) चिल्ला उठे। पश्चिमी विद्वान भी इस साहित्य के आपार और अलौकिक ज्ञान को देख कर चकित हुए। श्रीमती हीलरवैलौक्स नामक अमेरिकन विदुषी महिला लिखती हैं–

"हमने भारतवर्ष के प्राचीन धर्म के विषय में सुना है और पढ़ा हैं। यह उन महान वेदों की भूमि है जो अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं। जिनमें न केवल पूर्ण जीवन के लिए उपयोगी धार्मिक तत्व बताये गये हैं, बल्कि उन तथ्यों का भी प्रतिपादन है जिन्हें विज्ञान ने सत्य प्रमाणित कर दिया है। बिजली, रेडियम, इलक्ट्रानिक्स, हवाई जहाज आदि सब चीजें वेदों के द्वारा ऋषियों को ज्ञात प्रतीत होती हैं।

जहां वेदों में इतना ज्ञान भरा है, हमारे ज्ञान को विदेशी ले गये फिर भी समाप्त न हो सका हमें अपने आप गर्व होना चाहिए कि हम सब आर्यवर्त की पुण्य भूमि पर जन्में है, जहां ज्ञान की गंगा बहती है।

लेकिन हमें तो दूसरों की नकल करने में अपना गौरव नजर आता है, आईए हम सभी आर्य परिवार मिलकर एक संकल्प ले कि हमें अपनी धरोहर वेद ज्ञान के प्रचार को जन–जन तक पहुंचाना है। यह होली पर्व पर हम सभी आर्यजन वैदिक रीति के अनुसार मनायेंगे ऐसा संकल्प ले तभी महर्षि दयानन्द सरस्वती के सपनों को साकार कर पायेंगे। सभी आर्यजनों को होली की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। आप प्रसन्न रहे स्वस्थ्य रहे यह होली का पर्व आपके जीवन में प्रसन्नता लाये ऐसी मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ। सभी आर्य जनों को होली की हार्दिक मंगलकामनाएं।

ओ३म्

गुरूकुल महाविद्यालय पूठ (पुष्पावती)

गढ़मुक्तेश्वर (हापुड़) का

वार्षिक महासम्मेलन समारोह

18, 19 मार्च, 2018 रविवार, सोमवार

प्रिय महोदय,

आपके प्रिय गुरूकुल पूठ का वार्षिक महासम्मेलन दिनांक १८, १६ मार्च २०१८ को कुलभूमि में उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। जिनमें आर्य जगत के उच्च कोटि के विद्वान् महात्मा, नेता एवं भजनोपदेशक पधार रहें हैं।

अतः आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपने इष्ट मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में दर्शन देकर धर्म लाभ उठावें।

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

५ मार्च से श्री स्वामी प्रणवानन्द जी की अध्यक्षता में यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न होगा। इसके संयोजक कुलदीप आचार्य जी रहेंगे। यज्ञ की पूर्णाहुति १६ मार्च को प्रातः १०.०० बजे होगी। यजमान बनने के इच्छुक सज्जन सम्पर्क करें।

संचालक– स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती • मो0 : 9837402192

अनिवार्य सूचना एवं निमंत्रण पत्र

प्रदेश की समस्त जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं के पदेन अध्यक्ष, मंत्री, कोषाध्यक्ष एवं जिला अधिष्ठाता– आर्यवीर दल तथा जिला निरीक्षक–जिला मीडिया प्रभारी एवं मण्डल स्तर तथा प्रदेश स्तर के समस्त अधिकारियों, अन्तरंग व सहयुक्त सदस्यों की एक अनिवार्य बैठक ०४ व ०५ मार्च २०१८ दिन रविवार व सोमवार को प्रातः ११ बजे से आर्य समाज मन्दिर हरिद्वार में आहूत की गई है। जिसमें आर्य समाज के संगठन को सुदृढ़ करने एवं जिले की प्रत्येक समाज का भौतिक सत्यापन करके कम्प्यूटरीकृत करने पर विचार किया जायेगा। प्रदेश के सभी जिलों में वेद प्रचार को कैसे सफलता प्राप्त हो सकती है अपने–अपने स्तर के सुझाव एवं उत्तरदायित्वों पर भी चिन्तन किया जायेगा।

आशा है आप सभी समय पर पहुँच कर अपनी उपस्थिति से बैठक की गरिमा बढ़ायेंगे। आर्य समाज हरिद्वार हरकीपैड़ी के निकट श्रवणनाथ नगर, हरिद्वार में स्थित हैं।

संयोजक– वीरेन्द्र पवार, संयोजक आर्य समाज हरिद्वार,
सम्पर्क सूत्र – 08755024315

डा0 धीरज सिंह	स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती	अरविन्द कुमार
कार्यवाहक प्रधान	सभा मंत्री	सभा कोषाध्यक्ष
9412744341	9837402192	9412212344

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक – मुद्रक –प्रकाशक –श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।